भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 3736
उत्तर देने की तारीख 24.03.2025

प्राचीन संप्रदायों का पुनरुत्थान

3736. डॉ. नामदेव किरसान :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने विशेषकर कुंभ मेले जैसे आयोजनों के दौरान प्राचीन संप्रदायों का पुनरुत्थान देखा है;

(ख) इस पुनरुद्धार में योगदान देने वाले कारकों का ब्यौरा क्या है और समकालीन भारतीय समाज में इसका क्या महत्व है; और

(ग) सरकार द्वारा समावेशिता और सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देते हुए इन संप्रदायों की परम्पराओं को सहायता और संरक्षण देने के लिए उठाए गए/उठाए जाने वाले कदमों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क): कुंभ मेला एक महत्वपूर्ण हिंदू तीर्थ उत्सव है और विश्व के सबसे बड़े धार्मिक आयोजनों में से एक है, जहाँ लाखों भक्त पवित्र नदियों में स्नान करने के लिए एकत्रित होते हैं। इस आयोजन के दौरान, अनेक प्राचीन संप्रदाय, आध्यात्मिक संगठन और धर्म गुरु एकजुट होते हैं, जो अक्सर ही सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे अनुष्ठानों, परंपराओं और प्रथाओं को प्रदर्शित करते हैं।

(ख): भारत में प्राचीन संप्रदायों का पुनरुत्थान आधुनिक धार्मिक चुनौतियों के मद्देनजर सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर में बढ़ती रुचि और गूढ़ अर्थ की खोज जैसे कारकों से प्रेरित है। सोशल मीडिया और धार्मिक पर्यटन ने भी इन संप्रदायों के बारे में जानकारी का प्रसार करने में भूमिका निभाई है। यह पुनरुत्थान समकालीन समाज में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पारंपरिक प्रथाओं को संरक्षित करने में सहायता करता है, भौतिकवाद का

विकल्प प्रदान करता है, सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देता है और भारत के सांस्कृतिक मूल के प्रति राष्ट्रीय गौरव की भावना को सुदृढ़ करता है।

(ग): सरकार कुंभ मेले जैसे आयोजनों का समर्थन करती है, जो भारत की समावेशिता और सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देते हुए प्राचीन संप्रदायों की परंपराओं को परिरक्षित करते हैं। संस्कृति मंत्रालय अनेक सांस्कृतिक उत्सवों/कार्यक्रमों का आयोजन/समर्थन भी करता है, जैसे काशी तमिल संगमम, माधवपुर घेड़, सौराष्ट्र तमिल संगमम, राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव आदि, जहां प्राचीन पंथों सहित सभी प्रकार के दर्शक भाग लेते हैं, जिससे समावेशिता और सांस्कृतिक विविधता सुनिश्चित होती है।

****